6

लोक कला में मोटिफ

(Folk Art as Motif)

6.0 भूमिका

मानव जीवन की नीरसता को सरस रूप देती है–कला। इसीलिए जहाँ मानव है– वहीं कला है और यदि लोक कला की बात की जाए तो भारत की लोक कलाएँ तो शायद सबसे आगे स्थान ले जाएं क्योंकि विभिन्न कलाओं का अथाह भंडार है हमारा देश।

इस पाठ को पढ़ने के बाद आप जान पाएंगे कि लोक कलाएं अपने आप में अमूल्य खज़ाना (निधि) एवं धरोहर हैं। पीढ़ी दर पीढ़ी चलने वाली ये लोक कलाएं घरों की दीवारों और फर्शों पर विकसित होती रही हैं। इनका विषय चाहे धार्मिक रहा हो या वैवाहिक या अन्य कोई, किंतु एक बात तो सभी लोक कलाओं में सामान्य रूप से देखने को मिलती है– वह है इन लोक कलाओं का केवल मात्र बिन्दुओं या रेखाओं द्वारा अतुलनीय सृजन एवं संयोजन। इसके अलावा इनकी अन्य विशेषताएँ हैं–सरल आकृतियां, प्राकृतिक रंग, तिनकों के आगे कपड़ा बांध कर तूलिका को बनाना, फर्श, दीवारों या कपड़े पर चित्रांकन एवं स्वाभाविक अभिव्यक्ति। ये लोक कलाएं साधारण होकर भी असाधारण हैं और राष्ट्रीय एवं अन्तराष्ट्रीय स्तर पर प्रशंसा की ऊँचाइयों को छू चुकी हैं।

भारत का लगभग हर प्रदेश अपनी कोई विशिष्ट शैली की लोक कला के लिए प्रसिद्ध रहा है। आपकी भी अपने प्रदेश की कोई पारम्परिक विशिष्ट लोक कला होगी। उसके विषय में आप जानने की कोशिश करें।

भारत की लोक कलाओं का एक अभिन्न गुण रहा है, वह है इनका अलंकारिक एवं सजावटी रूप जिसके कारण कच्ची मिट्टी से पुते फर्श और दीवारें भी एक बहुमूल्य कृति बन जाते हैं। प्रत्येक लोक कला की अपनी अनूठी छाप है। इन कलाओं में आप देखेंगे कि कुछ खास पशु–पक्षी, फूल, हाथी, मोर, मछली, कमल, आदि अपने बड़े सरल रूप में प्रयुक्त हुए हैं। कहीं–कहीं ये पशु–पक्षी, फूल आदि प्रतीक चिन्ह के रूप में भी बनाए गए हैं।

उदाहरण के लिए "अल्पना" बनाने के अनेक तरीके हैं और इस लोक कला को विभिन्न प्रदेशों में अलग–अलग नाम से जाना जाता है, जैसे 'अल्पना" बंगाल में तो, "ओसा", "उड़ीसा में, "चौका पूरना" उत्तर प्रदेश में "मांडवा राजस्थान में, "ऐपन अरिपन" उत्तर भारत में आदि।

6.1 उद्देश्य

इस पाठ के अध्ययन के बाद शिक्षार्थी इस योग्य होंगे कि

- पारम्परिक प्रथागत डिज़ाइन बना सकते हैं,
- स्थानीय तथा आधुनिक रंगों को लोक कला में प्रयोग कर सकते हैं,
- अल्पना तथा रंगोली स्वयं बना सकते हैं,
- पारम्परिक रंग–संयोजन के द्वारा डिज़ाइन बना सकते हैं।

6.2 अभ्यास

आगे आपको महाराष्ट्र में "अल्पना" बनाने के कुछ नमूने दिए गए हैं। इसके अतिरिक्त उत्तर भारत में मांगलिक कार्यों, धार्मिक पर्वों या विशेष सांस्कृतिक अवसरों पर भूमि सज्जा की जाती है, जिसको चावल के रंग से ज्यामितिक आकार से बनाया जाता है। इन परम्परागत चित्रों को *अरिपन* कहते हैं जिसमें घर की स्त्रियां कला के द्वारा अपने आराध्य देव को अपनी श्रद्धा भावना अर्पित करती हैं।

यह बेहद आश्चर्यजनक बात है कि बिन्दु (.) और आड़ी तिरछी रेखाओं में भावों की अभिव्यक्ति का असीम सागर छिपा है और प्रत्येक आलेखन इनके द्वारा ही बना है। इस पाठ में आपको कुछ नमूने बॉर्डर के, कुछ बुट्टी के, कुछ वर्गाकार आलेखन दिखाए गए हैं, जिनके आधार पर आप बहुत से और भी नमूने बना सकते हैं। ये आलेखन आप ग्रीटिंग कार्ड, कुशन कवर, दुपट्टा, साड़ी पर भी बना सकते हैं।

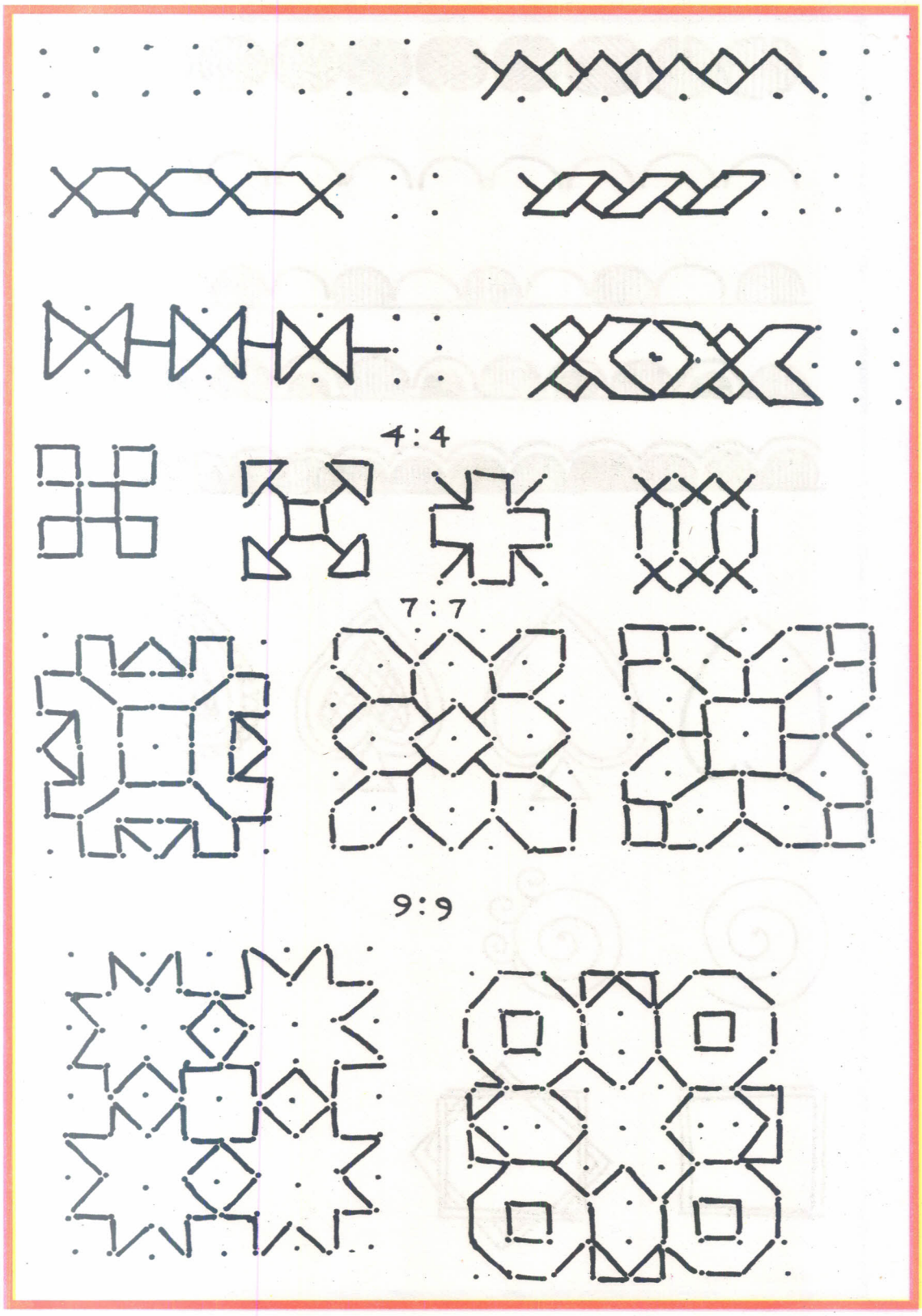

चित्र 6.1

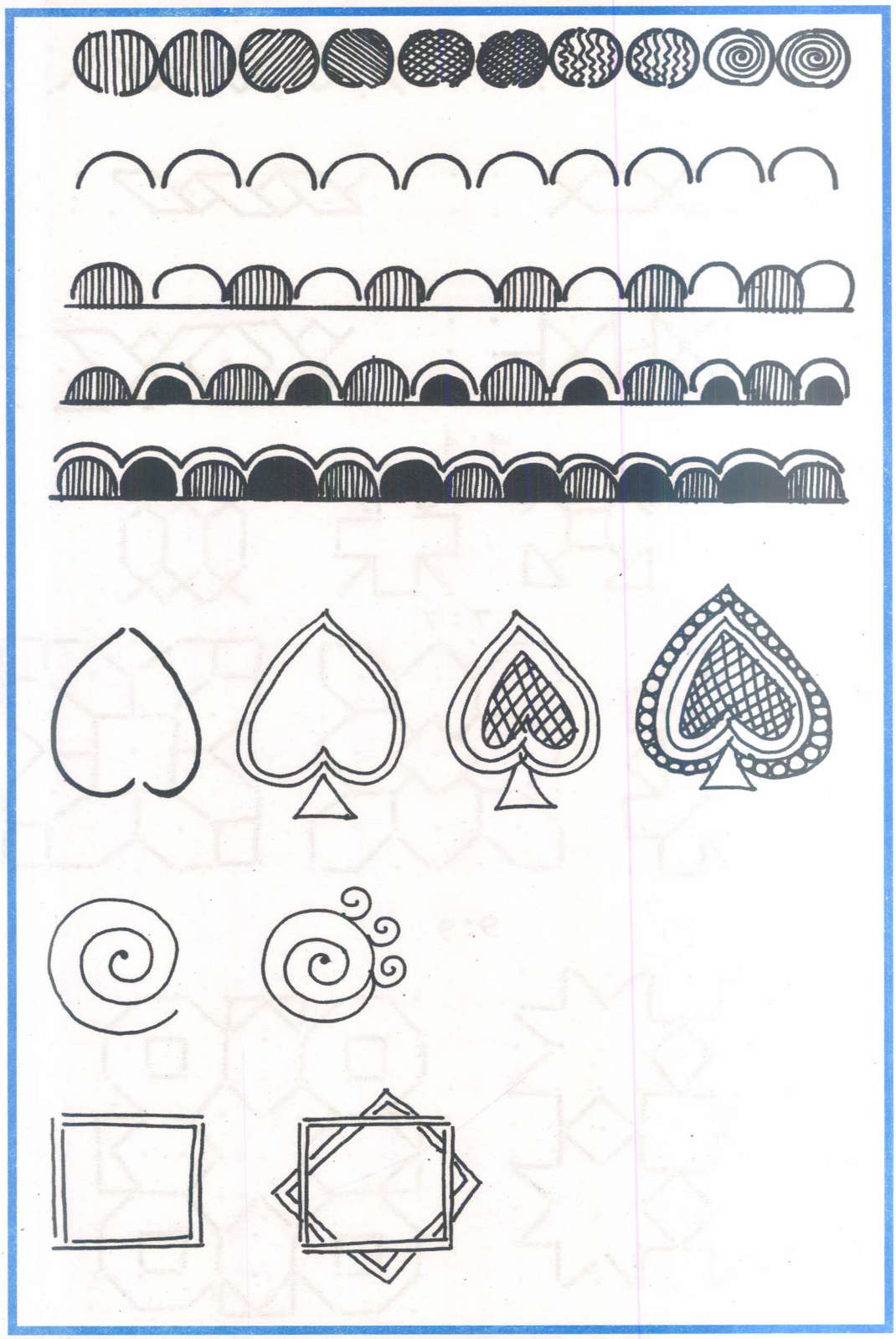

चित्र 6.2

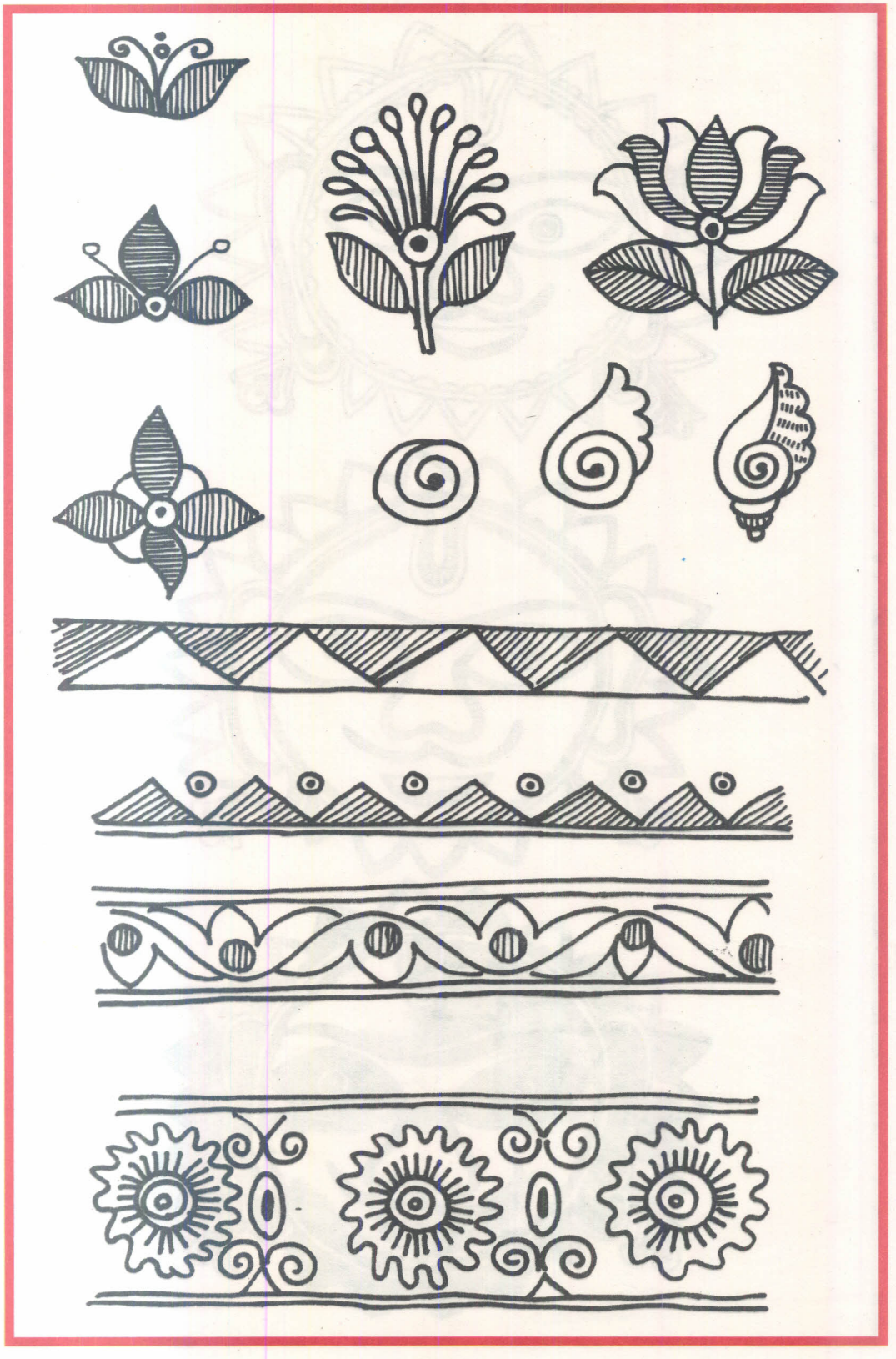

चित्र 6.3

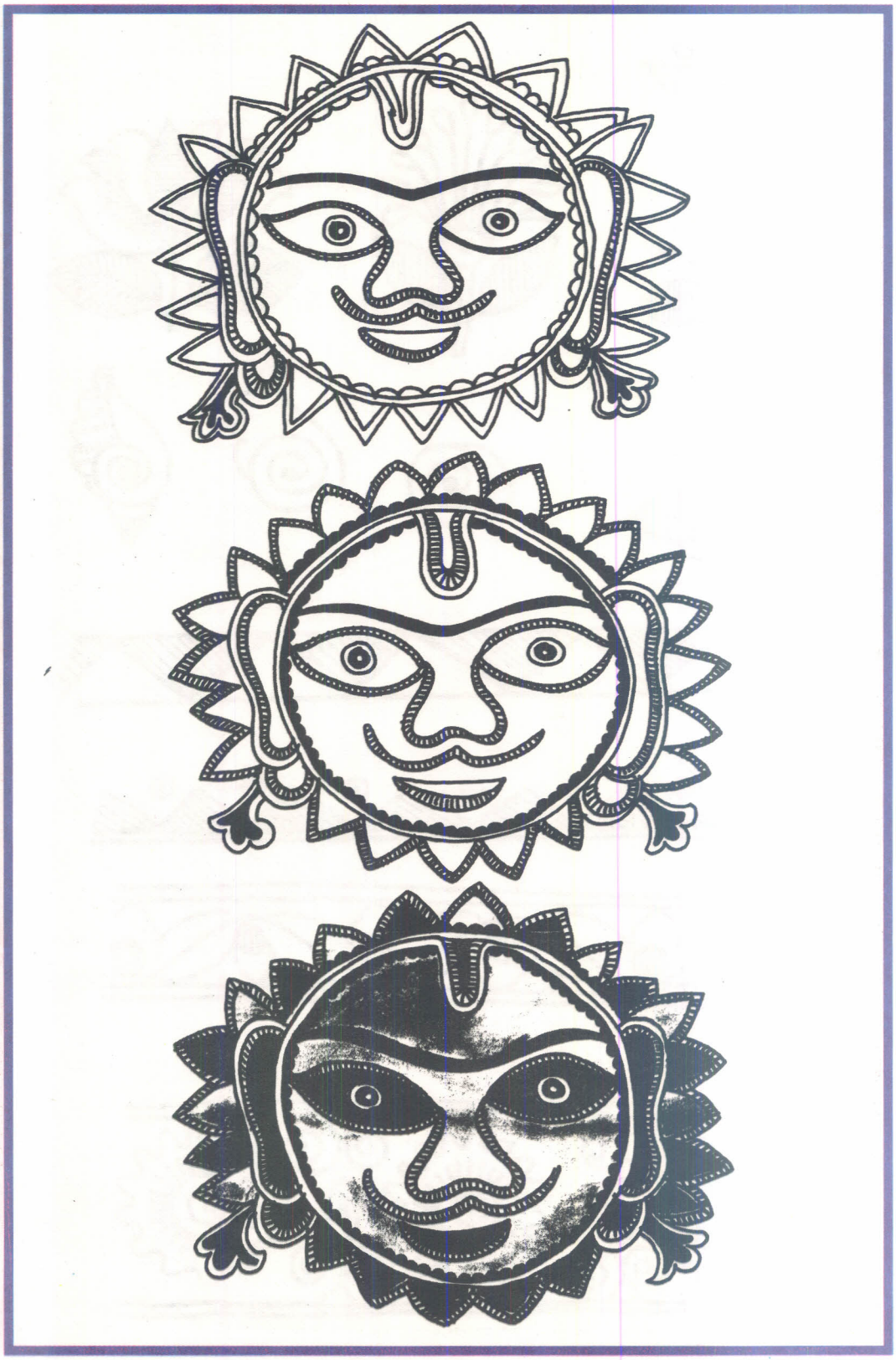

चित्र 6.4

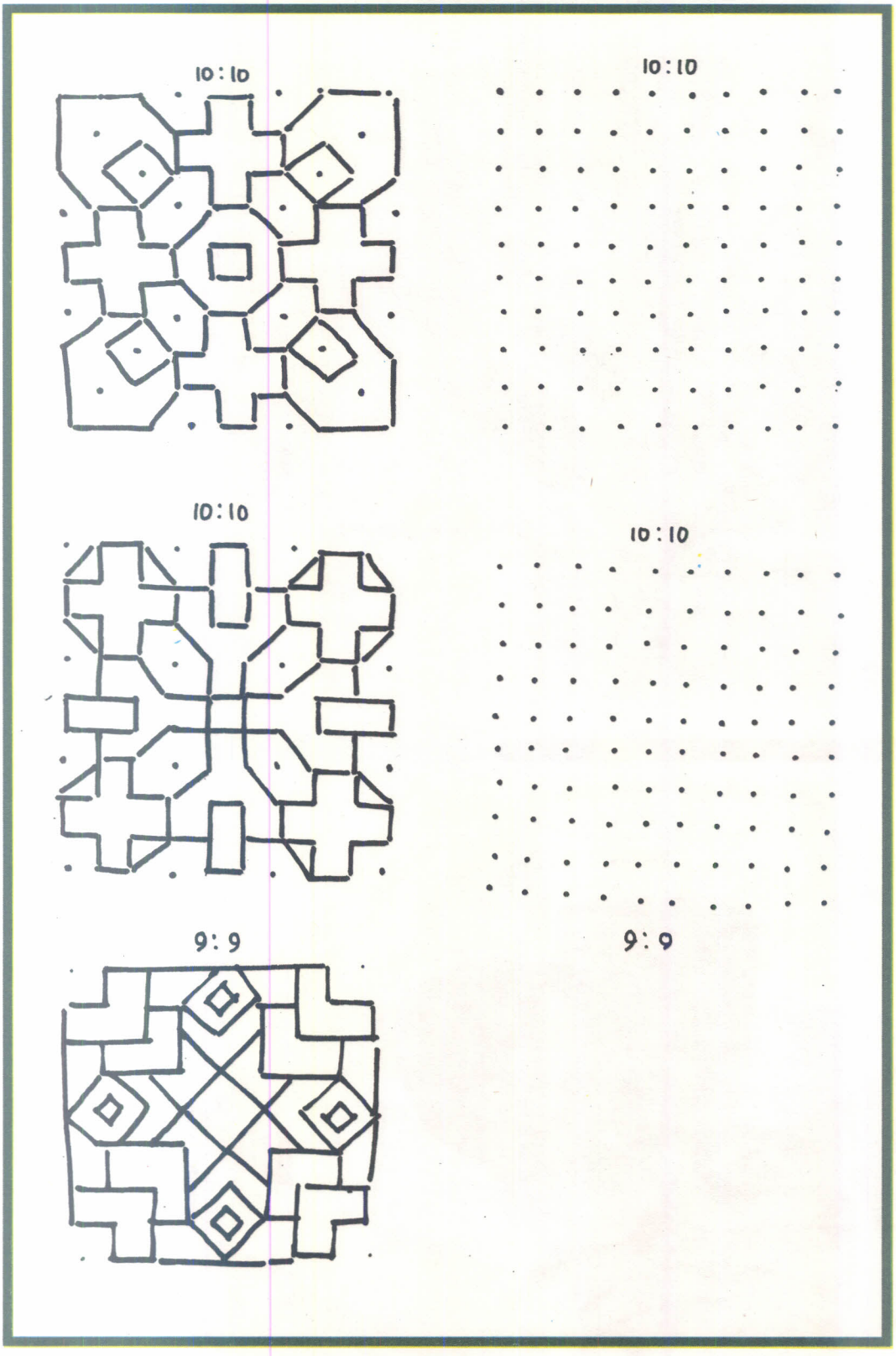

चित्र 6.5